अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का उनके कार्य उत्तरदायित्व एवं पेशेवर संतुष्टि पर प्रभाव का अध्ययन

मनोज कुमार शुक्ला*
सुरेश चन्द्र पचौरी**

यह शोध पत्र माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का उनके कार्य उत्तरदायित्व एवं व्यावसायिक (पेशेवर) संतुष्टि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन पर आधारित है। इस अध्ययन में न्यादर्श के रूप में देहरादून जनपद के (वर्ष 2019–20 में) सभी विकास खंडों के अंतर्गत समस्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत कुल 2532 अध्यापकों में से 400 अध्यापकों का यादृच्छिक विधि से चयन किया गया था। अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति मापने हेतु अहलूवालिया (2014) द्वारा निर्मित शिक्षण अभिवृत्ति परीक्षण परिसूची, कार्य उत्तरदायित्व हेतु शर्मा (2017) द्वारा निर्मित अध्यापक कार्य उत्तरदायित्व मापनी एवं पेशेवर संतुष्टि हेतु सिंह एवं शर्मा (2019) द्वारा निर्मित पेशेवर संतुष्टि मापनी का उपयोग किया गया था। शोधार्थी द्वारा आँकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं प्रसरण विश्लेषण का उपयोग किया गया था। इस शोध अध्ययन में निष्कर्ष के रूप में पाया गया कि अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का कार्य उत्तरदायित्व एवं पेशेवर संतुष्टि के माध्य फलांकों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है। जबकि पेशेवर संतुष्टि एवं कार्य उत्तरदायित्व के माध्य फलांकों के मध्य सार्थक अंतर पाया गया अर्थात पेशेवर संतुष्टि का कार्य उत्तरदायित्व पर प्रभाव पड़ता है। इस शोध अध्ययन के परिणामों के आधार पर अध्यापकों को अपने कार्य उत्तरदायित्व के प्रति जागरूक करते हुए तथा पेशेवर संतुष्टि के सार्थक समाधानों के साथ शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हेतु प्रेरित किया जा सकता है।

शिक्षा मानव विकास का एक अत्यंत महत्वपूर्ण सूचकांक है। शिक्षा शब्द संस्कृत भाषा के 'शिक्ष' धातु से बना है जिसका अर्थ होता है— 'सीखना'। जगदगुरु शंकराचार्य ने जहाँ शिक्षा को विद्या के रूप में मुक्ति के साधन की संज्ञा दी है वहीं स्वामी विवेकानन्द ने मनुष्य की अंतर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करने को शिक्षा के रूप में स्वीकार किया है। शिक्षा एक व्यापक शब्द है जो कई कारकों का समुच्चय है। जिसमें सबसे महत्वपूर्ण कारक है— अध्यापक। शिक्षा की गुणवत्ता को निर्धारित करने में मानवीय संसाधन के रूप में अध्यापक की आधारभूत भूमिका को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता है। अध्यापक शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को कितने प्रभावशाली ढंग से संचालित करता है? यह उसकी शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति पर निर्भर करता है। यह अभिवृत्ति अध्यापकों के कार्यदायित्व एवं पेशेवर संतुष्टि को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है।

**शोधार्थी*, श्री गुरू राम राय विश्वविद्यालय, देहरादून, उत्तराखण्ड 222001
***प्रोफेसर*, शिक्षा संस्थान, श्री गुरू राम राय विश्वविद्यालय, देहरादून, उत्तराखण्ड 222001

वर्तमान में *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* नवाचारी शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं को अपनाने की अनुशंसा करती है। ऐसी स्थिति में अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और कार्यदायित्वों में बदलाव आना अपेक्षित है। सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी के इस दौर में अध्यापकों की भूमिका बच्चों को न केवल ऑनलाइन प्लेटफार्म के माध्यम से शिक्षण प्रदान करने की है, अपितु तकनीकी के नकारात्मक पक्ष से विद्यार्थियों का बचाव करने हेतु एक पथ-प्रदर्शक की भी हो गई है। इसलिए *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* ने भी दक्षता एवं कौशल विकास की प्रासंगिकता को रेखांकित किया है। अब शिक्षा का लक्ष्य जीवन के लिए सीखना हो गया है। इसलिए संप्रेषण, सहयोग, रचनात्मकता, तर्कपूर्ण चिंतन और समयबद्ध सूचनाओं का प्रबंधन आदि भी शिक्षण के अभिन्न अंग हो गए हैं। इसी परिप्रेक्ष्य में अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का उनके कार्यदायित्वों एवं पेशेवर संतुष्टि पर प्रभाव को ज्ञात करना आवश्यक हो गया है।

विभिन्न स्तरों पर अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति पर प्रभाव डालने वाले कारकों का अध्ययन किया गया है। चौधरी (1990), सोम (1994), हुसैन (2004), चौहान (2009) एवं सिंह (2012) ने अपने शोध अध्ययनों में शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व, वैवाहिक स्थिति, आयु, जेंडर, विद्यालयों के प्रकार, शिक्षण अनुभव, शिक्षण माध्यम आदि चरों पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया। पाण्डेय (1995) ने अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं शैक्षिक व्यवहार में महत्वपूर्ण संबंध पाया है। डार (2019) ने यह पाया कि प्रभावशाली विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति कम प्रभावशाली विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों से उच्च होती है। अध्यापक कार्य उत्तरदायित्व पर विभिन्न कारकों एवं शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के बीच संबंध स्थापित करने हेतु बहुत कम अध्ययन हुए हैं। श्रीवास्तव (1979) ने उत्तरदायित्व की भावना, प्रभावशीलता तथा शिक्षण अभिवृत्ति में धनात्मक सहसंबंध पाया। कुमार (1992) ने उत्तरदायित्व की भावना एवं शिक्षण कुशलता का तुलनात्मक अध्ययन किया और उनके मध्य सार्थक अंतर नहीं पाया। सिंह (2001) ने पाया कि माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों के जेंडर, वैवाहिक स्थिति एवं अनुभव का उत्तरदायित्व की भावना पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। यादव (2010), गुप्ता (2016) ने दायित्वबोध एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया। नन्दिनी (2013) ने विभिन्न प्रकार के महाविद्यालयों के अध्यापकों में जेंडर, आयु, अनुभव तथा आरक्षण के आधार पर उत्तरदायित्व का अध्ययन किया और सार्थक प्रभाव नहीं पाया। शर्मा एवं परवीन (2017) ने माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों में जवाबदेही का जेंडर एवं बोर्ड के संदर्भ में अध्ययन किया और उनके मध्य सार्थक अंतर पाया। इसी प्रकार विभिन्न स्तरों पर अध्यापकों की पेशेवर संतुष्टि पर प्रभाव डालने वाले कारकों का अध्ययन किया गया। कौर (1983), दीक्षित (1986), खातून और हसन (2000) एवं रजनी (2010) ने अपने अध्ययनों में पेशेवर संतुष्टि पर आयु, जेंडर, शिक्षण अनुभव, शिक्षण स्तर एवं अन्य व्यक्तिगत चरों पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया। गुप्ता एवं जैन (2003) ने यह पाया कि वेतन, सुरक्षा, भौतिक स्थिति, स्थानांतरण एवं पदोन्नति आदि पेशेवर संतुष्टि को प्रभावित करते हैं।

अरोड़ा (2014) ने अध्यापकों के पेशेवर संतुष्टि व संस्थागत भूमिका तनाव के मध्य महत्वपूर्ण संबंध पाया। सरकार (2018) ने अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के अध्यापकों की कार्य संतुष्टि में सार्थक अंतर पाया। कुमार (2020) ने अध्यापकों की कार्य संतुष्टि एवं पेशेवर प्रतिबद्धता के मध्य धनात्मक सार्थक सहसंबंध पाया।

शोध अध्ययन का औचित्य

किसी भी राष्ट्र का विकास मूल रूप से प्राकृतिक संसाधन एवं मानव संसाधन पर निर्भर करता है और मानव संसाधन का विकास उचित और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पर निर्भर करता है। किसी राष्ट्र के बहुमुखी विकास के लिए क्षेत्र विशेष में कार्य करने के लिए विशेष योग्यता, कौशल प्राप्त एवं सकारात्मक अभिवृत्ति वाले व्यक्तियों की आवश्यकता होती है। अतः शिक्षा से संबंधित प्रत्येक योजना का सफल क्रियान्वयन अध्यापकों के वैयक्तिक व्यवहार, उनकी शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति, शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं एवं कार्य निष्ठा आदि पर निर्भर करता है।

शोधार्थी द्वारा शिक्षण के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति, अपने कार्य उत्तरदायित्वों को भली-भाँति निर्वहन करने वाला एवं अपने पेशे से पूर्ण रूप से संतुष्ट नहीं होगा तो विद्यार्थियों का भविष्य अंधकारमय हो सकता है। शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति, कार्य उत्तरदायित्वों एवं पेशेवर संतुष्टि पर कई शोध अध्ययनों की समीक्षा करने के पश्चात यह पता चला कि इस संबंध में बहुत कम अध्ययन हुए हैं। अत: शोधार्थी ने इस अध्ययन में यह ज्ञात करने का प्रयास किया कि माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का उनके कार्य उत्तरदायित्व एवं पेशेवर संतुष्टि पर क्या प्रभाव पड़ता है।

शोध समस्या कथन

माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का उनके कार्य उत्तरदायित्व एवं पेशेवर संतुष्टि पर प्रभाव का अध्ययन।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त चरों का परिभाषीकरण

इस शोध अध्ययन में प्रयुक्त प्रमुख चरों का परिभाषीकरण इस प्रकार है—

- **कार्य उत्तरदायित्व** — किसी व्यक्ति की अपने पेशे में संलग्नता या जुड़ाव से कर्तव्य पालन की समीक्षा को कार्य उत्तरदायित्व कहते हैं अर्थात किसी कार्य को विशेष प्रकार से करने की ज़िम्मेदारी है। *ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी* के अनुसार — "कार्य उत्तरदायित्व का अर्थ, विश्वास या कर्तव्य से लिया जाता है। कार्य उत्तरदायित्व व्यक्ति के अंदर की शक्तिशाली भावना है जो जन्म के साथ ही व्यक्ति से जुड़ जाती है।"
- **पेशेवर संतुष्टि** — व्यक्ति के किसी पेशे को अपनाने या प्राप्त करने के उपरांत उस कार्य को करने में उसे जो आत्मिक संतोष एवं आनंद का अनुभव होता है, वह पेशेवर संतुष्टि कहलाती है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

इस शोध अध्ययन के उद्देश्य इस प्रकार थे—

- माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति, कार्य उत्तरदायित्व एवं पेशेवर संतुष्टि का अध्ययन करना।

- माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के कार्य उत्तरदायित्व पर उनकी शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के प्रभाव का अध्ययन करना।
- माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की पेशेवर संतुष्टि पर उनकी शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएँ

इस शोध अध्ययन की शून्य परिकल्पनाएँ इस प्रकार थीं—

- माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का कार्य उत्तरदायित्व एवं पेशेवर संतुष्टि के माध्य फलांकों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के कार्य उत्तरदायित्व का शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं पेशेवर संतुष्टि के माध्य फलांकों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की पेशेवर संतुष्टि का कार्य उत्तरदायित्व एवं शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के माध्य फलांकों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।

न्यादर्श

इस शोध अध्ययन हेतु प्रतिदर्श के रूप में देहरादून जनपद (वर्ष 2019–20 में) के समस्त विकासखण्डों (डोईवाला, रायपुर, सहसपुर, विकासनगर, कालसी, चकराता) के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत ग्रामीण क्षेत्र से कुल 200 अध्यापकों (100 पुरुष, 100 महिला) तथा शहरी क्षेत्र से कुल 200 अध्यापकों (100 पुरुष, 100 महिला) का यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा चयन किया गया था।

शोध अध्ययन की प्रकृति

इस शोध अध्ययन हेतु वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया था।

शोध उपकरण

इस शोध अध्ययन हेतु अहलूवालिया (2014, नेशनल साइकोलॉजिकल कॉर्पोरेशन, आगरा) द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत शिक्षण अभिवृत्ति परीक्षण परिसूची, शर्मा (2017, नेशनल साइकोलॉजिकल कॉर्पोरेशन, आगरा) की अध्यापक कार्य उत्तरदायित्व मापनी तथा सिंह एवं शर्मा (2019, नेशनल साइकोलॉजिकल कॉर्पोरेशन, आगरा) की पेशेवर संतुष्टि मापनी का उपयोग कर आँकड़ों का संग्रहण किया गया। शिक्षण अभिवृत्ति परीक्षण परिसूची में कुल 90 प्रश्न हैं। इस परिसूची का विश्वसनीयता गुणांक 0.79 है, अंकन हेतु पाँच बिंदु मापनी (पूर्णत: सहमत, सहमत, अनिर्णित, असहमत एवं पूर्णत: असहमत) के अनुसार सकारात्मक पदों के लिए मान 4, 3, 2, 1 एवं 0 है तथा नकारात्मक पदों के लिए मान 0, 1, 2, 3 एवं 4 निर्धारित है। अध्यापक कार्य उत्तरदायित्व मापनी में कुल 45 कथनों (प्रश्नों) को सम्मिलित किया गया। इसका विश्वसनीयता गुणांक 0.88 है, सकारात्मक तथा नकारात्मक पदों के लिए मान 4 से 0 और 0 से 4 अंक भार दिए गए। इसी प्रकार पेशेवर संतुष्टि मापनी में कुल 30 कथनों (प्रश्नों) को लिया गया, इस मापनी का विश्वसनीयता गुणांक 0.978 है। मापनी का अंकन अध्यापक कार्य उत्तरदायित्व मापनी की भाँति ही किया गया। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, f-मान अर्थात प्रसरण विश्लेषण (ANOVA) का उपयोग किया गया।

तालिका 1— अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के संदर्भ में कार्य उत्तरदायित्व एवं पेशेवर संतुष्टि का प्रसरण विश्लेषण

क्र. सं.	क्षेत्र	प्रसरण के स्रोत	वर्गों का योग	आवृत्ति अंश	मध्यमान वर्ग	f मान	सार्थकता
1.	कार्य उत्तरदायित्व	समूहों के मध्य	38089.560	119	320.080	2.670	0.000
		समूहों के आंतरिक	33564.717	280	119.84		
		योग	71654.278	399			
2.	पेशेवर संतुष्टि	समूहों के मध्य	15218.135	119	127.883	1.396	0.013
		समूहों के आंतरिक	25658.302	280	91.637		
		योग	40876.438	399			

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शून्य परिकल्पना 1— माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का कार्य उत्तरदायित्व एवं पेशेवर संतुष्टि के माध्य फलांकों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका 1 से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के संदर्भ में अध्यापक कार्य उत्तरदायित्व एवं पेशेवर संतुष्टि के मान की गणना करने पर अध्यापक कार्य उत्तरदायित्व का सार्थकता मान 0.000 प्राप्त हुआ है, जो कि सार्थकता स्तर के मान 0.05 से कम है। अतः माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का कार्य उत्तरदायित्व के माध्य फलांकों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है अर्थात अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का कार्य उत्तरदायित्व पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। इसका कारण यह हो सकता है कि अध्यापकों को राज्य सरकार की ओर से दी जाने वाली सुविधाएँ एवं अनुकूल कार्य के लिए परिवेश प्रदान करने से उनकी अपने पेशे के प्रति सकारात्मक अभिवृति होने से उनके कार्य उत्तरदायित्व पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ता है।

इसी प्रकार तालिका 1 से यह प्रदर्शित होता है कि पेशेवर संतुष्टि का सार्थकता मान 0.013 प्राप्त हुआ है, जो कि सार्थकता स्तर के मान 0.05 से कम है। अतः माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का पेशेवर संतुष्टि के माध्य फलांकों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है अर्थात अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का पेशेवर संतुष्टि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। अतएव शून्य परिकल्पना कि माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का कार्य उत्तरदायित्व एवं पेशेवर संतुष्टि के माध्य फलांकों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है, स्वीकृत की जाती है। इसका कारण यह हो सकता है कि अध्यापकों को राज्य सरकार की ओर से दी जाने वाली सुविधाएँ एवं अनुकूल कार्य के लिए परिवेश तथा समय-समय

पर अध्यापकों को अभिप्रेरित करने हेतु किए जाने वाले प्रयासों के कारण उनकी अपने पेशे के प्रति सकारात्मक अभिवृति होने से उनकी पेशेवर संतुष्टि पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ता है।

शून्य परिकल्पना 2— माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के कार्य उत्तरदायित्व का शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं पेशेवर संतुष्टि के माध्य फलांकों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका 2 से यह स्पष्ट होता है कि अध्यापक कार्य उत्तरदायित्व के संदर्भ में शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं पेशेवर संतुष्टि के मान की गणना करने पर शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का सार्थकता मान 0.000 प्राप्त हुआ है, जो कि सार्थकता स्तर के मान 0.05 से कम है। अतः माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के कार्य उत्तरदायित्व का शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के माध्य फलांकों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है अर्थात अध्यापकों के कार्य उत्तरदायित्व का शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। इसका कारण यह हो सकता है कि अध्यापकों को राज्य सरकार की ओर से दी जाने वाली सुविधाएँ एवं अनुकूल कार्य के लिए परिवेश प्रदान करने से उनके कार्य उत्तरदायित्व के कारण उनकी अभिवृत्ति पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ता है।

इसी प्रकार तालिका 2 से यह प्रदर्शित होता है कि पेशेवर संतुष्टि का सार्थकता मान 0.018 प्राप्त हुआ है, जो कि सार्थकता स्तर के मान 0.05 से कम है। अतः माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के कार्य उत्तरदायित्व का पेशेवर संतुष्टि के माध्य फलांकों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है अर्थात अध्यापकों के अध्यापक कार्य उत्तरदायित्व का पेशेवर संतुष्टि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। अतएव शून्य परिकल्पना कि माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत

तालिका 2— अध्यापकों के कार्य उत्तरदायित्व के संदर्भ में शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं पेशेवर संतुष्टि का प्रसरण विश्लेषण

क्र. सं.	क्षेत्र	प्रसरण के स्रोत	वर्गों का योग	आवृत्ति अंश	मध्यमान वर्ग	f मान	सार्थकता
1.	शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति	समूहों के मध्य	165051.329	59	2797.480	3.376	0.000
		समूहों के आंतरिक	281723.249	340	828.598		
		योग	446774.577	399			
2.	पेशेवर संतुष्टि	समूहों के मध्य	8361.269	59	141.716	1.482	0.018
		समूहों के आंतरिक	32515.169	340	95.633		
		योग	40876.438	399			

अध्यापकों के कार्य उत्तरदायित्व का शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं पेशेवर संतुष्टि के माध्य फलांकों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है, स्वीकृत की जाती है। इसका कारण यह हो सकता है कि अध्यापकों को राज्य सरकार की ओर से दी जाने वाली सुविधाएँ एवं अनुकूल कार्य के लिए परिवेश के कारण उनकी पेशेवर संतुष्टि पर प्रभाव पड़ता है।

शून्य परिकल्पना 3— माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की पेशेवर संतुष्टि का कार्य उत्तरदायित्व एवं शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के माध्य फलांकों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका 3 से यह स्पष्ट होता है कि पेशेवर संतुष्टि के संदर्भ में अध्यापक कार्य उत्तरदायित्व एवं शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के मान की गणना करने पर अध्यापक कार्य उत्तरदायित्व का सार्थकता मान 0.062 प्राप्त हुआ है, जो कि सार्थकता स्तर के मान 0.05 से अधिक है। अतः माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की पेशेवर संतुष्टि का कार्य उत्तरदायित्व के माध्य फलांकों के मध्य सार्थक अंतर है अर्थात अध्यापकों की पेशेवर संतुष्टि का कार्य उत्तरदायित्व पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। अतएव शून्य परिकल्पना कि माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की पेशेवर संतुष्टि का कार्य उत्तरदायित्व के माध्य फलांकों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है, अस्वीकृत की जाती है। इसका कारण यह हो सकता है कि अध्यापकों को राज्य सरकार की ओर से दी जाने वाली सुविधाएँ एवं अनुकूल कार्य के लिए परिवेश के कारण अध्यापकों की पेशेवर संतुष्टि का कार्य उत्तरदायित्व पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

इसी प्रकार तालिका 3 से यह प्रदर्शित होता है कि शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का सार्थकता मान 0.010 प्राप्त हुआ है, जो कि सार्थकता स्तर के मान 0.05 से कम है। अतः माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की पेशेवर संतुष्टि का शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के माध्य फलांकों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है अर्थात अध्यापकों की पेशेवर संतुष्टि का शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। जबकि शून्य परिकल्पना कि माध्यमिक

तालिका 3— अध्यापकों की पेशेवर संतुष्टि के संदर्भ में कार्य उत्तरदायित्व एवं शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का प्रसरण विश्लेषण

क्र. सं.	क्षेत्र	प्रसरण के स्रोत	वर्गों का योग	आवृत्ति अंश	मध्यमान वर्ग	f मान	सार्थकता
1.	कार्य उत्तरदायित्व	समूहों के मध्य	11473.483	49	234.153 171.945	1.362	0.062
		समूहों के आंतरिक	60180.794	350	171.945		
		योग	71654.278	399			
2.	शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति	समूहों के मध्य	81518.922	49	1663.651	1.594	0.010
		समूहों के आंतरिक	365255.655	350	1043.588		
		योग	446774.578	399			

विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की पेशेवर संतुष्टि का शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के माध्य फलांकों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है, स्वीकृत की जाती है। इसका कारण यह हो सकता है कि अध्यापकों को राज्य सरकार की ओर से दी जाने वाली सुविधाएँ एवं अनुकूल कार्य के लिए परिवेश के कारण अध्यापकों की पेशेवर संतुष्टि का शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति पर प्रभाव पड़ता है।

शोध अध्ययन के परिणाम

इस शोध अध्ययन के परिणाम इस प्रकार हैं—

- माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के कार्य उत्तरदायित्व का शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के माध्य फलांकों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है अर्थात अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का कार्य उत्तरदायित्व पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
- माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का पेशेवर संतुष्टि के माध्य फलांकों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है अर्थात अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का पेशेवर संतुष्टि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
- माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के कार्य उत्तरदायित्व का शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के माध्य फलांकों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है अर्थात अध्यापकों के कार्य उत्तरदायित्व का शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
- माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के कार्य उत्तरदायित्व का पेशेवर संतुष्टि के माध्य फलांकों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है अर्थात अध्यापकों के कार्य उत्तरदायित्व का पेशेवर संतुष्टि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
- माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की पेशेवर संतुष्टि का कार्य उत्तरदायित्व के माध्य फलांकों के मध्य सार्थक अंतर है अर्थात अध्यापकों की पेशेवर संतुष्टि का कार्य उत्तरदायित्व पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।
- माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की पेशेवर संतुष्टि का शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के माध्य फलांकों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है अर्थात अध्यापकों की पेशेवर संतुष्टि का शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

निष्कर्ष

इस शोध अध्ययन के परिणामों के विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का उनके कार्य उत्तरदायित्व एवं पेशेवर संतुष्टि के माध्य फलांकों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है अर्थात अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का उनके कार्य उत्तरदायित्व तथा पेशेवर संतुष्टि पर कोई प्रभाव नही पड़ता है। इसी प्रकार अध्यापकों के कार्य उत्तरदायित्व का शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं पेशेवर संतुष्टि के माध्य फलांकों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है अर्थात अध्यापकों के कार्य उत्तरदायित्व का शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति तथा पेशेवर संतुष्टि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। परंतु माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की पेशेवर संतुष्टि एवं कार्य उत्तरदायित्व

के माध्य फलांकों के मध्य सार्थक अंतर पाया गया अर्थात पेशेवर संतुष्टि का प्रभाव अध्यापक कार्य उत्तरदायित्व पर सार्थक रूप में पड़ता है। जो अध्यापक अपने पेशे से जितने अधिक संतुष्ट होंगे वे अपने कार्य उत्तरदायित्व को उतनी ही बेहतरी से निभा पाएँगे। किसी भी राष्ट्र की उन्नति उस राष्ट्र की शिक्षा पद्धति, पाठ्यक्रम एवं अध्यापकों पर निर्भर करती है। अध्यापक का व्यक्तित्व विद्यार्थियों पर सीधा प्रभाव डालता है, इसलिए अध्यापक स्वयं भी उन गुणों से युक्त होना चाहिए जिनकी शिक्षा वह बच्चों को दे रहा है। अध्यापक की भूमिका एक शिल्पी की तरह होती है, उसे अपने ज्ञान को इस प्रकार प्रस्तुत करना होता है कि सभी बच्चे अधिकतम अधिगम प्राप्त कर सकें। अध्यापक की शिक्षण की अभिवृत्ति का सह-संबंध उसके कार्य उत्तरदायित्व एवं पेशेवर संतुष्टि से जुड़ा होता है। इसलिए अध्यापकों द्वारा शैक्षणिक कार्यों को पूर्ण मनोयोग से किया जाना चाहिए, जिससे शिक्षा के वांछित लक्ष्यों की प्राप्ति संभव हो सके। उन्हें अपने पेशे की उपयोगिता को सिद्ध करना चाहिए। अध्यापकों की पेशेवर संतुष्टि के लिए सतत रूप से उन्मुखीकरण कार्यक्रम चलाए जाने की आवश्यकता है।

शैक्षिक निहितार्थ

इस शोध अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थों के आधार पर वर्तमान शिक्षण व्यवस्था को सशक्त एवं प्रभावशाली बनाने में सहायता मिल सकती है। अतः अध्यापकों, प्रधानाध्यापकों, शैक्षिक प्रशासकों, शैक्षिक प्रबंधकों, नीति नियंताओं एवं शोधार्थियों से संबंधित शैक्षिक निहितार्थों का विवरण निम्नवत है—

- अध्यापकों के चयन हेतु नीति-निर्माण करने वाली संस्थाओं, जैसे— राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (एन.सी.टी.ई.), राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद एवं राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (एस. सी.ई.आर.टी.) आदि को शिक्षण पेशे में प्रवेश करने वाले अभ्यर्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति का परीक्षण करने के लिए व्यापक रूप से उपयुक्त तंत्र को डिजाइन किया जाना चाहिए।
- ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों को विशेष वेतन-भत्ते, आवास सुविधा, बच्चों के लिए निःशुल्क शिक्षा व्यवस्था एवं निःशुल्क चिकित्सा सुविधा देकर प्रोत्साहित करना चाहिए, जिससे वे अपना शत-प्रतिशत योगदान दे सकें।
- पाठ्यचर्या निर्माण की प्रक्रिया में अध्यापकों को अनिवार्य रूप से सम्मिलित किया जाना चाहिए, जिससे वे अपने शिक्षण एवं सीखने के वातावरण के अनुभवों को पाठ्यचर्या की रूपरेखा में शामिल करा सकें।
- अध्यापकों को शिक्षण के अतिरिक्त गैर शैक्षणिक कार्यों, जैसे— जनगणना, आर्थिक गणना, मतदान सूची, कोविड ड्यूटी आदि से मुक्त रखा जाए।
- अध्यापकों को नवीनतम तकनीकी आधारित शिक्षण, जैसे— डिजिटल बोर्ड, गूगल मीट शिक्षण, ऑनलाइन शिक्षण, व्हाट्सएप टींचिग आदि को प्रयोग करने हेतु प्रोत्साहित किया जाए एवं समय-समय पर नवीन शिक्षण तकनीकियों की जानकारी दी जाए।

- अध्यापकों में शिक्षण के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति एवं कार्य उत्तरदायित्व की भावना की जागरूकता हेतु समय-समय पर उन्मुखीकरण कार्यक्रमों, कार्यशालाओं एवं प्रशिक्षणों का आयोजन किया जाए।
- विद्यालयों में प्रभावी निरीक्षण एवं अनुश्रवण की व्यवस्था होनी चाहिए एवं उत्कृष्ट कार्य करने वाले अध्यापकों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
- अध्यापकों को सतत पेशेवर विकास के अवसर उपलब्ध कराए जाएँ।

संदर्भ

अरोड़ा, एस. 2014. द *आर्गेनाइजेशनल रोल स्ट्रेस एंड जॉब सटिस्फैक्शन अमंग टीचर्स* (पीएच.डी. थीसिस इन एजुकेशन). एम.जे.पी. रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली.

अहलूवालिया, एस. पी. 2014. *शिक्षण अभिवृत्ति परीक्षण परिसूची*. नेशनल साइकोलॉजिकल कॉर्पोरेशन, आगरा.

कुमार, मुकेश. 2020. *अध्यापक-प्राध्यापकों की कार्य संतुष्टि का उनकी पेशेवर प्रतिबद्धता एवं संगठनात्मक वातावरण के संदर्भ में अध्ययन*. (शोध प्रबन्ध शिक्षाशास्त्र), छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर.

कौर, बी. 1983. जॉब सटिस्फैक्शन ऑफ होम साइंस टीचर्स— इट्स रिलेशनशिप विद पर्सनल, प्रोफेशनल एंड ओर्गनाइजेशनल कैरेक्टरिस्टिक. संपादन में बुच, एम.बी. (संपादक). *फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन* (1983–1988). रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली.

खातून, टी. और जेड. हसन. 2000. जॉब सटिस्फैक्शन ऑफ सेकंडरी टीचर्स इन रिलेशन टू देयर पर्सनल वैरिएबल्स— सेक्स, एक्सपीरियंस, प्रोफेशनल ट्रेनिंग, सैलरी एंड रीलिजन. *इंडियन एजुकेशनल रिव्यू*. जनवरी, वॉल्यूम 36.

गुप्ता, एस.पी. 1980. *ए स्टडी ऑफ जॉब सटिस्फैक्शन एट थ्री लेवल ऑफ टीचिंग* (पीएच.डी. थीसिस इन एजुकेशन). मेरठ विश्वविद्यालय, मेरठ.

गुप्ता, मधु एवं रचना जैन. 2003. जॉब सटिस्फैक्शन ऑफ नर्सरी स्कूल टीचर्स वर्किंग इन दिल्ली. *इंडियन साइकोलॉजिकल रिव्यू*. 61, पृष्ठ संख्या 49–86

चौधरी, शोभना. 1990. *ए स्टडी ऑफ सर्टेन सिचुएशनल एंड साइकोलॉजिकल फैक्टर्स इन रिलेशन टू ऐटिट्यूड एंड सक्सेस,* (पीएच.डी. थीसिस) सी.एस.जे.एम.यूनिवर्सिटी, कानपुर.

चौहान, मीना. 2009. *विभिन्न वर्गों के अध्यापकों में सामाजिक समरसता, शिक्षण पेशे में प्रति अभिवृत्ति एवं पेशेवर प्रतिबद्धता का अध्ययन* (पीएच.डी. थीसिस शिक्षाशास्त्र). उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान मान्य विश्वविद्यालय, गाँधी विद्या मन्दिर, सरदारशहर, राजस्थान.

दीक्षित, एम. 1986. *कम्पैरेटिव स्टडी ऑफ वर्क सटिस्फैक्शन ऑफ प्राइमरी एंड सेकंडरी स्कूल टीचर्स*. लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ.

नन्दिनी, दुर्गेश. 2013. *स्ववित्त पोषित, वित्तीय सहायता प्राप्त एवं राजकीय महाविद्यालयों के अध्यापकों में लिंग, आयु, अनुभव तथा आरक्षण के आधार पर उत्तरदायित्व का अध्ययन* (शोध प्रबन्ध शिक्षाशास्त्र). एम.जे.पी. रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली.

पाण्डेय, एम. और कनौजिया सुमन. 1995. *बुन्देलखण्ड प्रक्षेत्र के जनजातीय समूहों की शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन* (शोध प्रबन्ध शिक्षाशास्त्र). बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी.

रजनी, उप्पल. 2010. *शिक्षण प्रशिक्षुओं में उच्च तथा निम्न अक्रियाशीलता का कार्य संतुष्टि के संबंध में प्रभाव का अध्ययन* (शोध प्रबन्ध शिक्षाशास्त्र). पंजाब विश्वविद्यालय, पंजाब.

मानव संसाधन विकास मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020.* दस्तावेज, पृष्ठ संख्या– 05. भारत सरकार, नई दिल्ली.

शर्मा, प्रतिभा. 2017. *अध्यापक कार्य उत्तरदायित्व मापनी*. नेशनल साइकोलॉजिकल कार्पोरेशन, आगरा.

शर्मा, प्रतिभा और परवीन अंजुम. 2017. माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों में जवाबदेही का जेंडर व बोर्ड के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाइड रिसर्च*. पृष्ठ संख्या 155–159.

श्रीवास्तव, उमा. 1979. *ए स्टडी ऑफ सेन्स ऑफ रिस्पॉन्सिबिलिटी अमंग सेकंडरी स्कूल टीचर्स* (पीएच.डी. थीसिस इन एजुकेशन). बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस.

सिंह, अमर और टी. आर. शर्मा, 2019. *पेशेवर संतुष्टि मापनी*. नेशनल साइकोलॉजिकल कॉर्पोरेशन, आगरा.

सिंह, प्रतिभा. 2001. *माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों और शिक्षिकाओं में उत्तरदायित्व की भावना का समीक्षात्मक अध्ययन* (पीएच.डी. थीसिस अप्रकाशित) शिक्षाशास्त्र). अवध विश्वविद्यालय फैजाबाद.

सोम. पी. 1994. *अध्यापकों के व्यक्तिगत स्वरूप तथा उनकी शिक्षण एवं संबंधित क्षेत्रों के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन* (पीएच.डी. शिक्षाशास्त्र). रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर.

हुसैन, शौकत. 2004. *स्टडी ऑफ इफैक्टिवनैस ऑफ टीचर ट्रेनिंग इन डेवलपिंग प्रोफेशनल ऐटिट्यूड ऑफ प्रोस्पेक्टिव सेकंडरी स्कूल टीचर्स* (पीएच.डी. थीसिस इन एजुकेशन). जामिया मिल्लिया इस्लामिया यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली.